अनुक्रमणिका

भूमिका i-ii

प्रथम अध्याय 1-38

परंपरा और आधुनिकता की अवधारणा

1.1. परंपरा की भारतीय अवधारणा

1.2. परंपरा की पाश्चात्य अवधारणा

1.3. आधुनिकता की भारतीय अवधारणा

1.4. आधुनिकता की पाश्चात्य अवधारणा

द्वितीय अध्याय 39-88

स्वातंत्र्योत्तर प्रमुख हिंदी नाटकों में परंपरा और आधुनिकता का समवाय

2.1. कोणार्क

2.2. अंधा युग

2.3. सूर्यमुख

2.4. एक और द्रोणाचार्य

2.5. शुतुरमुर्ग

2.6. बकरी

2.7. योर्स फेथफुली

2.8. कथा एक कंस की

2.9. प्रजा ही रहने दो

2.10. रस गन्धर्व

2.11. कोर्ट मार्शल

तृतीय अध्याय 89-163

मोहन राकेश के नाटकों में परंपरा और आधुनिकता

3.1. आषाढ़ का एक दिन

3.2. लहरों के राजहंस

3.3. आधे-अधूरे

3.4. पैर तले की जमीन

चतुर्थ अध्याय 164-229

सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में परंपरा और आधुनिकता

4.1. सेतुबंध

4.2. नायक खलनायक विदूषक

4.3. द्रौपदी

4.4. सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक

4.5. आठवां संर्ग

4.6. छोटे सैयद बड़े सैयद

4.7. एक दूनी एक

4.8. शकुन्तला की अंगूठी

4.9. कैद-ए-हयात

4.10. रति का कंगन

पंचम अध्याय 230-317

मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों में परंपरा और आधुनिकता: तुलनात्मक अध्ययन

5.1. 'आषाढ़ का एक दिन' और 'आठवां सर्ग'

5.2. 'आषाढ़ का एक दिन' और 'सेतुबंध'

5.3. 'लहरों का राजहंस' और 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक'

5.4. 'आधे-अधूरे' और 'द्रौपदी'

5.5. 'आधे-अधूरे' और 'शकुंतला की अंगूठी'

5.6. 'आधे-अधूरे' और 'एक दूनी एक'

5.7. 'पैर तले की जमीन' और 'द्रौपदी', 'एक दूनी एक', 'शकुंतला की अंगूठी'

5.8. 'आषाढ़ का एक दिन' और 'नायक खलनायक विदूषक'

5.9. 'आषाढ़ का एक दिन' और 'कैद-ए-हयात'

उपसंहार 318-334

सन्दर्भ-ग्रंथ सूची 335-343